प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शासन काल में भारत–चीन संबंध : एक समीक्षात्मक अध्ययन

पीएच. डी. पंजीयन हेतु प्रस्तावित शोध–प्रबंध का सार

स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग

सामाजिक विज्ञान संकाय

राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोध निर्देशिका

डॉ. रानी प्रगति प्रसाद(Reader)
Head
एम.ए., एम. फिल., पीएच. डी.,
स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

चन्द्रमणी कुमारी
एम. फिल.,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची

प्रस्तावित शोध कार्य का शीर्षक :

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शासनकाल में भारत–चीन संबंध : एक समीक्षात्मक अध्ययन

विषय की अद्यतन स्थिति :

अंतरराष्ट्रीय संबंधों का आशय सामान्यता स्वतंत्र एवं संप्रभु राष्ट्रों के मध्य राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, व्यवहारिक तथा कूटनीतिक संबंधों के संचालन से लगाया जाता है। विश्व के लगभग 200 से अधिक संप्रभु राष्ट्र राज्य वर्तमान में परस्पर अंतः क्रिया कर रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय राजनीति में नित्य नए परिवर्तन होने के कारण आज किसी भी दो राष्ट्रों के बीच के संबंधों को समझना एवं उसका आकलन करना आसान कार्य नहीं है। इसलिए इस बदलते परिवेश में किन्ही दो राष्ट्रों के आपसी संबंधों को समझने के लिए इनके बीच के विविध पक्षों का अध्ययन और विश्लेषण करना अति आवश्यक प्रतीत होता है क्योंकि वर्तमान में विश्व के किन्ही दो देशों के बीच का संबंध ना सिर्फ उनके बीच के संबंधों को प्रभावित करते हैं बल्कि वे अन्य देशों के अंतरराष्ट्रीय संबंधों को भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। उपर्युक्त सारी बातें भारत और चीन के बीच के संबंधों पर भी अक्षरशः लागू होते हैं।

भारत और चीन को वृहद प्राचीन, प्रतिष्ठित, प्राकृतिक संसाधन संपन्न, महान सभ्यता और संस्कृति वाले विकासशील एशियाई देश होने का गौरव प्राप्त है। दोनों देश एक दूसरे के पड़ोसी होने के साथ–साथ वर्तमान के दो बड़ी शक्ति होने की यात्रा भी साथ में तय की है। भारत और चीन वैश्विक पटल पर उभरती हुई ना केवल आर्थिक शक्ति है बल्कि परमाणु शक्ति संपन्न देश भी है। इसके अलावा जनसंख्या की दृष्टि से भी दोनों देश उतना ही विशालकाय हैं। भारत और चीन दोनों प्राकृतिक संसाधन संपन्न होने के कारण औपनिवेशिक शासन द्वारा लंबे समय तक दोहित और शोषित किए गए हैं। दोनों देशों ने लंबे संघर्ष के बाद लगभग एक साथ ही स्वतंत्र होकर संप्रभु होने का परिचय दिया है। चीन की स्वतंत्रता पर पहला मुहर लगाने वाला गैरसाम्यवादी देश भारत ही था। इसके अलावा दोनों देश धार्मिक, शैक्षिक और व्यापारिक जुड़ाव भी प्राचीन समय से ही रखते हैं। दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंधों की शुरुआत तब से ही मानी जाती है जब चीन में राजशाही सत्ता के स्थान पर साम्यवादी सत्ता का आगमन होता है। देखा जाए तो प्रारंभ में दोनों देशों का संबंध मैत्रीपूर्ण और सम्मानजनक था परंतु वर्तमान समय में उनके बीच का संबंध अधिक जटिल होते देखा जा रहा है, और इस जटिलता के अनेक कारण है। जिसमें प्रमुख कारण है– भू–सामरिक संबंध, विचाधारात्मक अंतर और आर्थिक आयाम के साथ–साथ अंतरराष्ट्रीय पटल पर दोनों की मजबूत स्थिति भी है।

अतीत के परिप्रेक्ष्य में जब हम वर्तमान को रखकर देखते हैं तो वर्तमान पूरी समग्रता के साथ हमारे सामने होता है। अतः प्रस्तावित शोध द्वारा प्राचीन समय से लेकर वर्तमान समय

तक विशेषकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शासन काल में इन दोनों देशों के बीच संबंधों की जटिलताओं व द्वन्दों के साथ–साथ सहयोग व समन्वय के बिंदु को भी उजागर करने का प्रयास किया जाएगा। दोनों देशों के बिगड़े संबंधों के ऐतिहासिक कारणों सहित 2014 से वर्तमान तक कि प्रमुख घटनाओं तथा इनके वैश्विक प्रभावों का भी अध्ययन करने का प्रयास किया जाएगा।

साहित्य समीक्षा

किसी भी प्रस्तावित शोध के सही दिशा निर्देशन के लिए उससे संबंधित पूर्व में किए गए कार्यों एवं अध्ययनों का समीक्षा करना अति आवश्यक होता है। भारत और चीन के बीच के संबंधों को व्यवस्थित विवरण प्रस्तुत करने के संबंध में भी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई है। जिसमें से कुछ महत्वपूर्ण अध्ययनों की समीक्षा निम्नवत की गई है –

1. 'माधवराम', "असहज पड़ोसी" युद्ध के 50 वर्षों बाद भारत और चीन प्रभात पेपर बैक्स नई दिल्ली–2015 इस पुस्तक में लेखक द्वारा 1962 के युद्ध में अपने पड़ोसी को सही तरह से समझने में भारत की असफलता को उजागर करते हुए इसके कारण हुए नुकसानों को दर्शाया गया है।
2. 'डॉ वी. एन. खन्ना', "अंतरराष्ट्रीय संबंध" (विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली)–2015 नामक पुस्तक में अंतरराष्ट्रीय संबंधों की विस्तृत विवेचन लेखक द्वारा किया गया है जिसमें भारत–चीन संबंध पर भी एक खंड दिया गया है।
3. 'केशव मिश्रा' एवं 'प्रवीण भारद्वाज', "20 वीं सदी में भारत–चीन संबंध" जेन नेक्स्ट पब्लिकेशंस–2016 इस पुस्तक में लेखक ने भारत और चीन के बीच संबंधों को उसके पड़ोसी देशों के उपस्थितियों के मद्देनजर अध्ययन करता है।
4. 'डॉ अरविंद कुमार चतुर्वेदी' की पुस्तक "भारत के पड़ोसी राष्ट्र और सुरक्षा चुनौतियां" नई दिल्ली ए. बी. पब्लिकेशंस–2016 में भारत और उसके पड़ोसी देशों के बीच आ रहे विभिन्न सुरक्षा चुनौतियों पर गहराई से अध्ययन करते हुए इसके समाधान का वर्णन किया गया है।
5. 'वीरेंद्र सिंह बघेल', "भारत को घेरता चीन" आत्माराम एंड संस, नई दिल्ली–2017 इस पुस्तक में चीन की छलवादी नीति को उजागर करते हुए यह बताया गया है कि कैसे चीन भारत के पड़ोसी देशों को अपने हित साधने के लिए उपयोग कर रहा है और भारत को उसी में उलझाते हुए अपने विकास को गति दे रहा है।
6. 'लिंटनर बर्टिल', "चाइनाज इंडिया वारः कोलिजन कोर्स ऑन द रूफ ऑफ द वर्ल्ड" ओ. यू. पी पब्लिकेशंस इंडिया–2017 लेखक द्वारा इस पुस्तक में भारत चीन के बीच हुए 1962 के युद्ध की वास्तविकता को दर्शाया गया है। यह पुस्तक चीनी राजनीति की अस्पष्ट दुनिया और चीनी नेतृत्व पर नजर डालती है।

7. 'जे एन दीक्षित', "भारतीय विदेश नीति" (प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली)–2017 नामक अपने पुस्तक में भारती के विदेश नीति के गत 50 वर्षों में हुए महत्वपूर्ण आख्यानों का क्रमानुसार विविध पक्षों को उजागर किया है। इस पुस्तक में लेखक ने विश्व के विभिन्न देशों विशेष कर अमेरिका, रूस, चीन तथा पाकिस्तान के साथ भारत के संबंधों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करते हुए अंतरराष्ट्रीय संबंधों का विराट विवेचन किया है।
8. 'डेविड स्मिथ', "द ड्रैगन एंड द एलीफैंट, चाइना, इंडिया एंड द न्यू वर्ल्ड ऑर्डर" प्रोफाइल बुक्स पब्लिकेशन, 2018 लेखक द्वारा इस पुस्तक में पूर्वी देशों का विश्लेषण करते हुए शक्ति के केंद्र के रूप में वाशिंगटन बीजिंग एवं दिल्ली को बताया गया है।
9. 'सतीश चंद्र पांडे' द्वारा लिखित पुस्तक "भारत–नेपाल संबंधः चीन के संदर्भ में" नई दिल्ली, आकृति प्रकाशसन–2019 में लेखक द्वारा भारत–नेपाल और चीन के सुरक्षा संबंधी हितों पर ध्यान केंद्रित करते हुए इनके बीच आ रहे है उतार–चढ़ाव भरी सफर को उजागर करने की कोशिश की है तथा भारत की संपूर्ण उपमहाद्वीप को शांति क्षेत्र घोषित करने की प्रतिबद्धता को दर्शाया गया है।

अनुसंधान समस्या

द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के पश्चात उपनिवेशवादी जंजीरों को तोड़कर स्वतंत्र हुए एशिया के दो प्राचीन सभ्यताओं वाला राष्ट्र भारत और चीन के बीच संबंधों का अध्ययन अंतरराष्ट्रीय राजनीति का एक बेहद ही रोचक पहलू है। एशिया के इन दो विशाल राष्ट्रों के पास न सिर्फ समृद्ध इतिहासिक धरोहर है बल्कि अंतरराष्ट्रीय पटल पर दोनों राष्ट्र महत्वपूर्ण स्थिति में भी है। एक तरफ दोनों देशों के बीच कई समानताएं हैं जैसे विशाल जनसंख्या, तेजी से बढ़ रही अर्थव्यवस्था, विश्व राजनीति में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के प्रति सजगता, तो दूसरी तरफ अनेक असमानताएं भी हैं। जैसे शासन प्रणाली में भिन्नता, एक पश्चिमी लोकतांत्रिक गणराज्य तो दूसरा साम्यवादी जनवादी राज्य। इनके विदेश नीति के लक्ष्य एवं उद्देश्य में भी विभिनता देखने को मिलता है। इन समानताओं और असमानताओं के कारण ही अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दोनों देशों का हित अक्सर टकराते हुए देखे गए हैं। जिसका मुख्य कारण दोनों देशों के विदेश नीति और विचारधारात्मक अंतर है। प्रस्तावित शोध विषय के संबंध में शोधार्थी का अध्ययन क्षेत्र निम्नलिखित होगा–

1. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शासनकाल में भारत–चीन संबंधों को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक कौन–कौन से हैं?
2. दोनों देश के बीच हुए आर्थिक, व्यापारिक, शैक्षणिक, औद्योगिक तथा सामाजिक क्षेत्र में सहयोग तथा सहयोग जैसे गंभीर मुद्दों की पहचान कैसे की जा सकती है?
3. दोनों देशों के आपसी समस्याओं को शांतिपूर्ण तरीके से कैसे हल किया जा सकता है?
4. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शासन में भारत–चीन संबंधों का वैश्विक स्तर पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
5. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शासनकाल में भारत–चीन संबंधों का उनके भविष्य पर कैसा प्रभाव होगा?

6. एशिया में शक्ति संतुलन स्थापित करने में भारत–चीन संबंध की क्या भूमिका होगी?
7. प्रधानमंत्री मोदी शासन काल के दौरान भारत–चीन संबंधों में सुरक्षा चुनौतियां ने कूटनीतिक गतिशीलता और क्षेत्रीय भू राजनीति को कैसे प्रभावित किया है?

शोध प्रस्ताव के उद्देश्य एवं अभिप्रेरणाएँ

प्रस्तावित शोध विषय "प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शासनकाल में भारत–चीन संबंध : एक समीक्षात्मक अध्ययन" का चुनाव करने के पीछे प्रमुख उद्देश्य है कि भारत–चीन के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शासनकाल में संबंधों का गहन अध्ययन एवं विश्लेषण करते हुए इनके बीच संबंध में आए हुए उतार–चढ़ाव का अध्ययन किया जा सके। प्रस्तावित शोध का उद्देश्य 2014 से वर्तमान तक भारत–चीन संबंधों को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण कर उसके समाधान की दिशा में हर संभव विकल्प की खोज करना है। अतः प्रस्तावित शोध के प्रमुख उद्देश्य अग्रलिखित है–

1. भारत–चीन संबंध की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के आधार पर संबंधों का बदलते परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना।
2. भारत–चीन संबंधों को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।
3. भारत–चीन संबंधों के प्रभावी विकास के मध्य आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना।
4. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शासनकाल में भारत–चीन संबंधों के विकास का विश्लेषण करना और चीन के प्रति नीति एवं रणनीति के मुख्य बिंदुओं की पहचान करना।
5. प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत और चीन के संबंधों में वैश्विक स्तर पर प्रभाव का अध्ययन करना।
6. भारत और चीन के संबंधों में गतिशीलता का अध्ययन करना और भविष्य की नीति बनाने के लिए सुझाव देना।
7. एशिया में शक्ति–संतुलन के क्षेत्र में भारत–चीन संबंधों को समझने का प्रयास करना।

प्रस्तावित शोध अध्ययन की परिकल्पना/प्रश्न

प्रस्तावित शोध में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया जाएगा–

1. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शासनकाल में भारत–चीन संबंध दोनों देशों के घरेलू–अंतरराष्ट्रीय नीति से प्रभावित है।

2. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शासनकाल में चीन के भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंध भारत–चीन संबंधों को प्रभावित करते हैं।

3. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शासनकाल में भारत–चीन संबंध स्थाई प्रतिद्वंदता एवं सीमित संघर्ष के बीच चलते रहेंगे ।

प्रस्तावित अनुसंधान का स्वरूप और अध्ययन पद्धति

सामाजिक विज्ञान के शोध परिदर्शों के अनुरूप ही इस प्रस्तावित शोध प्रबंध में भी विश्लेषण केंद्रित शोध पद्धति को अपनाया जाएगा। प्रस्तावित शोध कार्य के उद्देश्यों के आधार पर अध्ययन का क्षेत्र विस्तृत होने के कारण शोधकत्री द्वारा शोध की एक से ज्यादा पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा। प्रस्तावित शोध अध्ययन में शोध की पद्धति के रूप में ना केवल वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति को अपनाया जाएगा बल्कि विषय की मांग के अनुसार ऐतिहासिक पद्धति का भी प्रयोग किया जाएगा। इसके अलावा भारत–चीन संबंधों को कई काल खंडों से गुजरना होगा, ऐसी स्थिति में विभिन्न काल खंडों में आए बदलाव के कारण तुलनात्मक पद्धति का भी प्रयोग किया जाएगा।

तथ्य संकलन हेतु अपनाए जाने वाले उपकरण

प्रस्तावित शोध हेतु आंकड़े द्वितीयक स्रोतों से लिया जाएगा। द्वितीयक सामग्री के रूप में लेखो, प्रतिवेदनों, पत्र–पत्रिकाओं एवं विभिन्न पुस्तकों का सहारा लिया जाएगा।

चूंकि अध्ययन का विषय वस्तु समसामयिक है अतः तथ्यों के संकलन एवं विश्लेषण के लिए पुस्तकालय पद्धति का अवलंबन किया जाएगा। प्रस्तावित शोध से संबंधित सामग्री का संकलन करने के लिए अन्य पुस्तकालयों स्थित पुस्तकों का प्रयोग किया जाएगा। इसके अलावा इंटरनेट और नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी से भी तथ्यों का संकलन किया जाएगा। अध्ययन में अंतरराष्ट्रीय संबंधों का सैद्धांतिक एवं अधिकतम व्यावहारिक पक्षों का निरपेक्ष मूल्यांकन करने का प्रयास किया जाएगा। प्रस्तावित शोध कार्य को तर्कपूर्ण एवं वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करते हुए यथासंभव निष्कर्ष तक पहुंचने का प्रयास किया जाएगा और इस शोध कार्य को पूर्वाग्रह मुक्त एवं विवेकसम्मत विश्लेषण पर आधारित किया जाएगा।

शोध कार्य का महत्व एवं प्रासंगिकता

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शासनकाल में भारत–चीन संबंध : एक समीक्षात्मक अध्ययन एक अति महत्वपूर्ण विषय है। प्रस्तावित शोध के लिए इस विषय का चयन इसकी महत्ता, उपयोगिता तथा दूरगामी प्रभावों के

मद्देनजर किया गया है। विश्व को गति और दिशा देने में इन दोनों एशियाई राष्ट्र की बहुत बड़ी भूमिका रही है और भविष्य में भी रहेगी। प्रस्तावित शोध के माध्यम से भारत और चीन के संबंधों में द्वंद तथा समन्वय दोनों परिप्रेक्ष्य के साथ–साथ नई नीतियों और विकास की संभावनाओं और उसके परिणामों का भी अध्ययन किया जाएगा। विशेषकर प्रधानमंत्री मोदी शासनकाल में हुए गतिविधियों का अध्ययन होगा। जिसके परिणाम का लाभ अनुसंधानकर्ताओं तथा नीति निर्माताओं को प्राप्त होगा। इन दोनों देशों के बीच का संबंध ना केवल राजनीतिज्ञों, कूटनीतिज्ञों एवं सामरिक विशेषज्ञों के लिए महत्व का विषय है बल्कि स्थाई और टिकाऊ संबंध कायम करने के लिए दोनों देशों के आम लोगों के लिए भी अति महत्व का विषय है। वर्तमान में भारत चीन संबंधों का अध्ययन विश्व शांति और विश्व बंधुत्व की भावना को स्थापित करने हेतु महत्वपूर्ण है। प्रस्तावित शोध का महत्व यह भी है कि यह भविष्य में दोनों देशों के संबंधों के विकास में मददगार होगा।

<u>विद्यमान ज्ञान में इसका योगदान :</u>

राजनीति विज्ञान का क्षेत्र निरंतर रूप से अनुसंधानो से विकसित होता रहा है। यह अनुसंधान भी कुछ ऐसे तथ्यों को उजागर करेंगे जो राजनीति शास्त्र के ज्ञान को समृद्ध करेंगे। अतः अनुसंधान के माध्यम से राजनीति के क्षेत्र में नवीन ज्ञान की प्राप्ति होगी।

<u>भविष्य के कार्य</u>

भारत–चीन संबंधों के विकास के विषय में भविष्य में निम्नलिखित क्षेत्रों में शोध कार्य किए जा सकते हैं–

1. भारत चीन संबंधों के साथ–साथ विश्व के अन्य देशों द्वारा चीन के साथ संबंधों में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन।
2. भारत चीन संबंधों का दक्षिण एशिया की राजनीति पर प्रभाव का अध्ययन।
3. चीन की वन बेल्ट वन रोड नीति का भारत की विदेश नीति पर प्रभाव का अध्ययन।
4. भारत चीन संबंधों को प्रभावित करने वाले गैर राजनीतिक कारकों का अध्ययन।
5. वैश्विक संदर्भ में चीन की विस्तार वादी नीतियों का अध्ययन किया जा सकता है।

<u>प्रस्तावित शोध के संभावित अध्याय</u>

प्रस्तावनाः

अध्याय 1: भारत–चीन संबंधः एक अवलोकन।

अध्याय 2: प्रधानमंत्री मोदी शासनकाल में भारत–चीन संबंधों के रणनीतिक और सुरक्षा सम्बन्धी मुद्दे।

अध्याय 3: प्रधानमंत्री मोदी शासनकाल में भारत और चीन के बीच व्यापार और आर्थिक संबंध।

अध्याय 4: प्रधानमंत्री मोदी शासनकाल में भारत की चीन नीति।

अध्याय 5: भारत–चीन संबंधों पर पडोसी देशों का प्रभाव

अध्याय 6: भारत–चीन संबंधों के भविष्य : संभावनाएं और चुनौतियां।

अध्याय 7: निष्कर्ष एवं सुझाव।

परिशिष्ट।

<u>संदर्भ ग्रंथ सूची</u>

- खन्ना, वी.एन.(2015). अंतरराष्ट्रीय संबंध. नोएडा (उत्तर प्रदेश) विकास पब्लिशिंग हाउस।
- खत्री, हरीश कुमार. (2014). भारत की विदेश नीति. भोपालः कैलाश पुस्तक सदन।
- गौतम, बी.पी. (2006) भारत की विदेश नीति. नई दिल्लीः मयूर पेपरबैक्स।
- गुप्ता, एम.जी. (2001). इंडिया फॉरेन पॉलिसी. आगरा वाई बी. पब्लिकेशर्स।
- जैन, वी.सी. (2014). भारत की विदेश नीति. नई दिल्लीः अटलांटिक पब्लिकेशर्स।
- दत्त बी. पी. (2011). स्वतंत्र भारत की विदेश नीति. इंडियाः नेशनल बुक ट्रस्ट।
- दीक्षित जे.एन. (2005). भारत की विदेश नीति और उनके पड़ोसी. नई दिल्लीः ज्ञान पब्लिशिंग हाउस।
- दीक्षित जे.एन. (2017). भारतीय विदेश नीति. नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन।
- पंत, पुष्पेश. (2016). भारत की विदेश नीति. नई दिल्लीः मेंग्रैव हिल्स एजुकेशन।
- बिन्द्रा, एस. एस. (2002). इंडिया एंड हर नेबर्स. न्यू दिल्लीः दीप एंड दीप पब्लिकेशन।
- मिश्रा, केशव और भारद्वाज, प्रवीण. (2016). 20वीं सदी में भारत चीन संबंध. नई दिल्लीः जेनेक्सट पब्लिकेशन।
- वर्मा, दीनानाथ. (1996). अंतरराष्ट्रीय संबंध. पटनाः ज्ञानदा प्रकाशन।
- विद्यालंकार, सत्यकेतु. (2012). विश्व की राजनीति और अंतरराष्ट्रीय संबंध. नई दिल्लीः श्री सरस्वती सदन।
- शौरी, अरुण. (2011). भारत–चीन संबंध. नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन।
- शौरी, अरुण. (2012). चीन मित्र था३?. नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन।

ONLINE ARTICLES

- *Compare armed forces*.

  Access: https://armedforces.eu/compare/country_China_vs_India

  Date Access: 27 February 2019

- Ivan Lidarev, *2017: A Tough Year for China-India Relations*.

  Published online on January 04, 2018

  Access: https://thediplomat.com/2018/01/2017-a-tough-year-for-china-india-relations/

  Date Access: 27 March 2019.

- Mukul Sanwal, *A New Equilibrium with China: Near simultaneous rise of neighbours is not unprecedented in Asia*, Published online on August 25, 2017

  Access: A New Equilibrium with China: Near simultaneous rise of neighbours is not unprecedented in Asia | Manohar Parrikar Institute for Defence Studies and Analyses (idsa.in)

  Date Access: 29 March 2019.

- Stephen Kotkin, *The Players Change, but the Game Remains*, Published online on July/August 2018 Issue,

  Access: Why Realism Explains the World | Foreign Affairs

  Date Access: 29 March 2019.

- Rajeswari Rajagopalan, *India's Changing Policy on Space Militarization: The Impact of China's ASAT Test,* Published online at India Review, vol. 10, no. 4, October–December, 2011, pp. 354–378

  Access: https://www.researchgate.net/publication/241712481_

India's_Changing_Policy_on_Space_Militarization_
The_Impact_of_China's_ASAT_Test
Date Access: 30 March 2019.

- Arun Kumar Sahu, Future off India-Nepal relations: Is China a factor? Published online at Strategic Analysis, volume 39 ,2015-issue-2, PP-197-204
Access:-https://de.doi.org/10.1080/0970061.204.1000670